कृष्ण भक्त मीराबाई की भक्ति भावना का सांगीतिक स्वरूप

प्रो० सुदेश कुमारी
शोध निर्देशिका, संगीत विभाग
गोकुलदास हिन्दु गर्ल्स कॉलेज
मुरादाबाद
ईमेल: *sudeshchandel95@gmail.com*

नमिता शर्मा
शोधार्थी, संगीत विभाग
महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय
बरेली
ईमेल: *namitasharma110@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:

प्रो० सुदेश कुमारी,
नमिता शर्मा

कृष्ण भक्त मीराबाई की भक्ति भावना का सांगीतिक स्वरूप

Artistic Narration 2024,
Vol. XV, No. 1,
Article No. 17 pp. 96-102

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2024-vol-xv-no1-233

सारांश

भक्ति संगीत में भक्ति काल संगीत का स्वर्ण काल माना जाता है जितने भी भक्त कवियों–कवित्रियों तथा अन्य भजन गायक–गायिकाओं ने इस काल को स्वर्णकाल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है जिसमें सर्वप्रथम नाम कृष्ण भक्त मीराबाई का आता है तथा भक्ति संगीत में मीराबाई का प्रमुख स्थान माना गया है। निःसंदेह मीराबाई भक्ति संगीत, काव्य व साहित्य की त्रिवेणी मानी गई है, इन तीनों ही कलाओं की वह पूर्ण ज्ञाता थी। भक्ति संगीत वह संगीत है जिसके द्वारा हम अपने ईश्वर, अपने आराध्य, अपने ईष्ट की वंदना करते हैं, हमारे मन के जो भाव होते हैं, वह भक्ति संगीत के माध्यम से ही प्रकट हो सकते हैं, अन्य किसी क्रिया द्वारा नहीं हो सकते हैं। भक्ति संगीत के द्वारा ही ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम तथा समर्पण की भावना ही भक्ति कहलाती है और जब इस अनन्य प्रेम तथा समर्पण की भावना को स्वर, लय और ताल में बाँधा जाता है तो वह ही भक्ति संगीत कहलाता है। ईश्वर के प्रति प्रेम तथा उनका प्रत्येक नाम एक मंत्र स्वरूप है। सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास आदि अनेकों संत–भक्तों ने स्वर तथा शब्दों की शक्ति से भगवान का अनन्य प्रेम प्राप्त किया तथा संसार में ईश्वर के प्रति सत्य का संदेश दिया। भक्ति संगीत के द्वारा ही समाज में उत्पन्न ईर्ष्या, द्वेश की भावना को मिटाया जा सकता है, भक्ति भावनाओं के द्वारा ही कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना भी क्षण भर में दूर किया जा सकता है। भक्ति संगीत में प्रेम के माध्यम से सभी परिस्थितियों का सामना भी किया जा सकता है।

मीराबाई का जन्म राजस्थान की जोधपुर रियासत में राठौर वंश में संवत 1959 में हुआ था। बाल्यकाल से ही मीरा की रुचि भगवान श्रीकृष्ण की पूजा में रहती थी। वह भगवान श्रीकृष्ण को ही अपना सब कुछ मानती थी, उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भगवान की भक्ति में ही समर्पित कर दिया था। भक्त शिरोमणि मीराबाई ने भक्ति का जो संदेश जन–मानस में विस्तारित किया, वह भजनों, पदों, काव्यों के रूप में दिया जिससे संपूर्ण लोकजीवन भी प्रभावित हो गया है।

राजस्थान की पुनीत पावन धरती भक्ति, त्याग, बलिदान, वीरता के गुणों से पूर्ण है, इसी पावन धरा से भक्ति रत्न मीराबाई का सुंदर नाम आता है। वह इस पावन भूमि के सुनहरे पन्नों में से एक है। भारतीय संगीत में आज तक जितने भी गायक–वादक रहे हैं, उनमें पुरुषों की संख्या स्त्रियों की अपेक्षा अधिक रही है, स्त्रियों द्वारा संगीत की साधना होती रही, परंतु उसका ज्यादा उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। इन्हीं में से भक्त कवियत्री मीराबाई थी, जिन्होंने गायन, वादन तथा नष्त्य को ही अपना जीवन बना रखा था। इन ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के विषय में जानने व इनसे जुड़े ऐतिहासिक स्थलों की जानकारी प्राप्त करने के लिए विश्व भर के लोग अपने आप ही इस पवित्र धरा की ओर खिंचे चले आते हैं। राजस्थान की पावन भूमि ने कई महान भक्तों व संतों को जन्म दिया है, साथ ही साथ कई महान संतों व भक्त कवियों ने इस महान धरा को कार्यस्थली के रूप में चुना है। राजस्थान के भक्तों व संतों में मीराबाई का स्थान सर्वोपरि माना गया है। मीराबाई की भक्ति भावना, सांगीतिक विचार जनमानस के लिए अनमोल धरोहर व प्रेरणा स्वरूप है।

मीराबाई उच्च कोटि की भक्त व सच्ची उपासिका थी। वह बाल्य काल से ही भक्ति भावना से ओत–प्रोत थी। वह भगवान श्रीकृष्ण को ही अपना सब कुछ मानती थी तथा वह श्रीकृष्ण को अपने पति रूप में स्वीकार कर चुकी थी। मीरा के रचित पदों में विरह की वेदना, त्याग, समर्पण, प्रेम, अनुराग आदि सभी स्पष्ट रूप में दर्शित होते हैं। मीरा के पदों की सरलता व सादगी उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। मीराबाई ने साहित्यिक संदेशों को जनमानस तक लोक संगीत के माध्यम से ही प्रस्तुत किया है, जिनके प्रति आज भी लोकमानस नतमस्तक है। इसी कारण सभी भक्त संतों में भक्त शिरोमणि मीराबाई का नाम सर्वोपरि है, जिनकी सच्ची निस्वार्थ भक्ति में आज भी सदिया बीत जाने के बाद भी उन्हें लोक मानस में जीवित रखा है।

मीराबाई को जीवित रखने में साहित्य व इतिहास दोनों का योगदान रहा है इसी का परिणाम है कि इतनी सदियाँ गुजर जाने के बाद भी भक्त कवियत्री मीराबाई के जीवन वृत व पदों की प्रमाणिकता सभी के मध्य बनी हुई है। पाँच सौ वर्षों के लंबे अंतराल बीत जाने के बाद भी जनमानस, जन–कठों व संतों एवं कवियों ने मीराबाई को सांस्कृतिक विरासत के स्वरूप में सहेज कर रखा है। यही संपूर्ण व अलौकिक विरासत लंबे समय तक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती रहेगी।

मीरा की भक्ति भावना

मीरा बाई की भक्ति भावना, मीरा में भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम को प्रस्तुत करती है, उनकी भक्ति भावना में उनके गीत न केवल संगीतिक स्वरूप में भगवान के प्रति प्रेम को दर्शाते हैं, बल्कि धार्मिक संदेशों को भी सरलता व सहजता से समझाते हैं। अधिकांश विद्वानों की मान्यता रही है कि बचपन में किसी साधु ने मीराबाई को श्रीकृष्ण की मूर्ति दी थी और विवाह के उपरांत वह अपनी मूर्ति अपने साथ चित्तौड़ ले गई थी। चित्तौड़ में वह श्रीकृष्ण की पूजा–अर्चना ही करती रहती थी। मीरा अपने पति रूप में गिरधर नागर को देखती थी, उनके सिवा वह किसी को भी अपने पति रूप में स्वीकार न कर सकी तथा सदैव ही कृष्ण

भक्ति में मग्न रहती थी। कुछ समय बाद पति की मृत्यु के पश्चात मीराबाई पर दुखों का पहाड़ सा टूट गया, जिससे उनका मन वैराग्य की ओर चल पड़ा और अधिकतर समय भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में बीतता गया, जैसे–जैसे दिन बीतते गए, मीराबाई की भक्ति और अधिक गहरी होती गई तथा मीरा की हर सांस भगवान श्रीकृष्ण के सुनाम से चलती रही। वह साधु संतों के साथ भगवान की भक्ति में इतनी मग्न हो जाती थी कि जैसे भगवान कृष्ण को ही उन्होंने अपना सब कुछ मान लिया हो। मीराबाई का ऐसे भक्ति करना, साधु संतों में बैठना राजा विक्रमादित्य को उचित नहीं लगा। अतः उन्होंने मीराबाई को भक्ति मार्ग से विमुख करने के लिए महल की चार दिवारी में बंद करने के आदेश दे दिए, तथा अधिक से अधिक दर्द व कष्ट मीराबाई को दिए गए। परंतु मीराबाई को ज्यों–ज्यों जितने कष्ट दिए गए त्यों–त्यों मीराबाई की श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति और अधिक दृढ़ होती गई और सांसारिक जीवन से उनका मोह घटता गया तथा कृष्ण भक्ति के प्रति सच्ची निष्ठा और अधिक बढ़ती गई। चित्तोड़ को छोड़कर वह कृष्ण भक्ति एवं साधु संतों की सेवा में अपना समय व्यतीत करने लगी। मीरा ने अपना संपूर्ण जीवन द्वारिका एवं वृंदावन में भजन एवं कीर्तन करके बिताया। इसी प्रकार मीरा की कृष्ण भक्ति नित–निरंतर दृढ़ तथा संकल्पित होती गई। वृंदावन और द्वारिका पहुंचने तक वह भगवान श्रीकृष्ण को अपने पति स्वरूप मे स्वीकार कर अमर सुहागिन बन गई तथा संपूर्ण जीवन कृष्ण भक्ति में ही न्योछावर कर चुकी थी।

हे री मैं तो प्रेम–दिवानी,
मेरो दर्द न जाणे कोय।
घायल की गति घायल जाणै,
जो कोई घायल होइ।।

मीराबाई के पदों का गहनता से अध्ययन किया गया तो पाया कि मीरा की आध्यात्मिक यात्रा तीन सोपानो के स्वरूप दिखाई देती है। प्रथम सोपान में भगवान श्री कृष्ण के प्रति सुंदर भक्ति जब वह व्यग्र होकर गा उठाती हैं, *"मैं विरहणी बैठी जाग, जब सोवेरी आली"*, इसी के साथ द्वितीय सोपान की बात करें तो वह है जब उन्हें कृष्ण की भक्ति से उपलब्धियों की प्राप्ति होती है और वह सुंदर गीत को गाकर कहती हैं, *"पायोजी मैंने राम रतन धन पायो"* मीरा के उद्‌गार शब्द उस, उसे प्रसन्नता के सूचक हैं जिसमें उन्हें भगवान श्रीकृष्ण प्राप्ति होती है, तृतीय सोपान यानि अंतिम सोपान में यह भावना जागृत होती है, जब उन्हें स्वयं आत्मबोध हो जाता है।

अँसुवन जल सींच– सींच प्रेम बैल बोई,
अब तो बैल फैल गयी आनंद फल होई।

इसी के आधार पर मीरा बड़े सरल तथा सहज स्वभाव से कहती है कि, *"मेरे तो गिरधर नागर दूसरा ना कोई"*। मीरा की भक्ति ईश्वर के लिए प्रेम का रूप है और प्रेम स्वरूप भक्ति जब प्राप्त हो जाती है तब अन्य किसी भी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा नहीं रहती है, ना किसी द्वेश की भावना रहती है। मीराबाई का सिर्फ और सिर्फ एक ही लक्ष्य था, वह था अपने प्रियतम आराध्या श्रीकृष्ण का रंजन कर, उस प्रेम को प्राप्त करना। वह अपने प्रियतम के लिए गीत गाती थी, और नृत्य भी करती थी, उनकी संपूर्ण साधना श्री कृष्ण जी के लिए ही थी। नारी संतों में सिर्फ मीराबाई का ही नाम प्रमुख रूप से आता है जो ईश्वर प्राप्ति हेतु लगी रहने वाली साधिकाओ में से एक थी। उनकी भक्ति भावना से संपूर्ण साहित्य अन्य भक्तों का, साधु संतों का मार्गदर्शन

करता है। मीरा के काव्य में सांसारिक बंधनों का त्याग एवं अपने ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव मिलता है। मीरा की दृष्टि में सुख–दुख, सम्मान, अभिमान आदि सभी का कुछ महत्व नहीं है, यदि कुछ सत्य है तो वह है गिरधर गोपाल। मीरा ने यही भक्ति प्राप्त कर ली है और मीरा की भक्ति की चरम सीमा भी यही है। भगवान श्री कृष्ण को मीराबाई परमात्मा, परम अविनाशी मानती थी, उनकी भक्ति में असत्य, ढोंग, मिथ्या की भावनाएं दिखाई नहीं देती, बल्कि भक्ति की भावना, सत्यता का मार्ग, संस्मरण, नृत्य और गायन आदि सम्मलित थे।

मीराबाई का समय उस वक्त का था जब हिंदू मुस्लिम संस्कृतियों का संघर्ष, धार्मिक कट्टरता, द्वेश आदि की भावना पनप रही थी, इन सभी विषयों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अनेको संप्रदायों, संप्रदायों के अनुयायियों से सत्संग तो किया परंतु किसी भी धार्मिक संप्रदाय की सेविका या फिर दासी नहीं बनी। मीरा ने सिर्फ और सिर्फ भगवान श्री कृष्ण की ही दासी बनना स्वीकार किया। मीरा की भक्ति सगुण थी अथवा निर्गुण, इस संबंध में अनेको विद्वानों के अलग–अलग मत हैं। परंतु किसी का कोई भी मत हो, यह स्पष्टतया साफ है कि मीरा के आराध्य के स्वरूप में कोई भी भ्रम या भ्रांति नहीं है। मीरा का संपूर्ण जीवन, उनका संपूर्ण प्रेम, संपूर्ण भक्ति सगुण लीलाधारी कृष्ण के प्रति ही थी, जो मीराबाई की सबसे सुंदर भक्ति मानी गई है। गिरधर गोपाल मीराबाई के परम आराध्य देव थे, मीरा ने अपने अनेकों पदों की रचनाएँ की, जिसमें उन्होंने सगुण रूप में साकार श्रीकृष्ण जी को अपने आराध्य देव के रूप में स्वीकार किया तथा अपने आराध्य के सगुण रूप का सुंदर तथा मनमोहक वर्णन करते हुए कहा है।

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोहिनी मूरत साँवरी सूरत, नैना बने विशाल।
अधर सुधा रस मुरली राजति, उर वैजयंती माल।।

अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि किसी को भी मीराबाई की सगुण भक्ति में कोई भी संदेह नहीं होना चाहिए। मीरा ने अपने भजनों, पदों आदि किसी में अगर अपने गिरधर के लिए निर्गुण ब्रह्मवाची उपाधियों का प्रयोग किया भी है तो उनके साथ कृष्ण का सगुण स्वरूप अभिन्न संशलिष्ट रहता है। सगुण उपासना का संपूर्ण क्षेत्र बहुत अधिक व्यापक तथा विस्तृत है। जिसमें सगुण भक्तों ने, गायको ने अपने आराध्य का गुणगान करने के लिए उसके विशुद्ध निर्गुण रूप को अपनी भक्ति के लिए प्रयोग किया है। परंतु जब निर्गुण उपासना की जाए तो उसमें सगुण उपासना या भक्ति के लिए कोई स्थान नहीं होता है। इसी प्रकार यदि मीराबाई ने अपनी भक्ति में "भज मन चरण कमल अविनाशी" कहकर निर्गुण अविनाशी शब्द का प्रयोग कर लिया तो उनकी सगुण उपासना की भक्ति में कोई आंच या फिर किसी भी प्रकार की कमी नहीं आती, क्योंकि साथ ही साथ उन्होंने चरण कमल शब्दों का भी सुंदर–सुंदर वंदन किया है।

मीराबाई के समय में रूढ़िवादी विचारधाराओं तथा सामंतवादी व्यवस्था अपने चरम उत्कर्ष पर थी, जिसमें परंपरागत जाति भेद, आचारों–विचारों तथा वर्ग भेद का महत्व था। ऐसे समय में भी मीराबाई ने सामानता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, नारियों के समानअधिकार आदि के लिए कोई स्थान नहीं था, उस व्यवस्था के विरूद्ध मीरा ने विद्रोह का शंखनाद किया तथा मीराबाई ने अपने गीतों के माध्यम से जन–मानस तक भक्ति भावना, त्याग, समर्पण, प्रेम अनुराग आदि का संदेश दिया। मीराबाई ने साहित्यिक, धार्मिक संदेशों को जन जन तक लोक संगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वस्तुतः मीराबाई के गीतों से, पदों से समाज में जो

परिवर्तन आया, उन पदों व गीतों के अनुभव को व्यक्त करने के लिए उन्होंने काव्य और संगीत को माध्यम के रूप में चुना था।

16वीं शताब्दी में भक्ति की जिस सरिता का उद्‌गम मीराबाई ने किया था, आज वह धारा भक्ति के स्वरूप में उसी प्रभा के साथ प्रवाहित हो रही है। मीरा की भक्ति को बाल्यकाल से ही जन्म देने और सीधे गिरधर से जोड़ने के लिए मीरा के महलों में लगे भगवान विष्णु जी के मंदिर के परिवेश की विशेष भूमिका रही थी। इसी कारण उन्हें किसी को भी गुरु रूप में स्वीकार नहीं करना पड़ा और उनकी भक्ति भावना संप्रदायों के दायरे से मुक्त रही। मीरा के अवसान को अब एक लंबा समय व्यतीत हो चुका है परंतु वह हम सभी के लिए एक सच्चा एवं समृद्ध साहित्य छोड़ कर गई है, जिसको उन्होंने स्वयं अपनी भक्ति भावना के साथ रच कर गाया है और उसके द्वारा अपना ही नहीं बल्कि अन्य सभी भक्तों, भक्त गायको का भी मार्गदर्शन किया। इसी के साथ मीरा की अलौकिक दृष्टि में वैभव, भौतिक सुख, समृद्धि सिर्फ कुछ समय के लिए ही है। इन सभी सुखों का त्याग करने से ही अपने आराध्य, अपने ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है अन्यथा नहीं।

मीराबाई का धर्म सिर्फ और सिर्फ अपने आराध्य श्री कृष्ण की भक्ति करना था, जिसमें किसी भी प्रकार की रूढ़िवादी परंपराओं के लिए कोई स्थान नहीं था। मीराबाई नवयुग की पुरोधा थी उन्होंने अपनी भक्ति भावना में ज्ञान के स्थान पर भावना पक्ष को अधिक महत्व दिया, उन्होंने उच्च सिद्धांतों, भावपूर्ण विचारों को भक्तिमय व सरल भाषा में हम सभी के सक्षम प्रस्तुत किया। इसी कारण मीराबाई के अनुयायियों में समाज के निम्न से लेकर उच्च वर्ग के सभी लोग शामिल थे। मीरा की अनन्य भक्ति उनके जीवन की सबसे सुंदर धरोहर बन गई थी। इस भक्ति हेतु मीरा को अनेको कष्टों, कठिन से कठिन दुखों का सामना करना पड़ा परंतु मीरा ने सभी कष्टो को, दुखों को कृष्ण भक्ति के द्वारा सहा और अपने साहस व आशा का परित्याग नहीं किया। मीरा के समय में सामाजिक परिस्थितिया समकालीन थी। हिंदू मुस्लिम संस्कृतियों का संघर्ष, धार्मिक कट्टरता तथा सांप्रदायिक भावनाएं पनप रही थी, लेकिन मीरा ने इन सभी को अपनी भक्ति भावना से कोसों दूर रखा और वह कृष्ण भक्ति में मगन होती गई। मीरा की भक्ति के द्वार सभी के लिए समान रूप से खुले थे। मीराबाई के गीतों में, पदों में, काव्य का भाव अधिक सुंदर दिखाई पड़ता है, काव्य के द्वारा संपूर्ण जीवन का सुख–दुख, उतार–चढ़ाव आदि का मीरा ने बखूबी वर्णन किया है। मीराबाई ने गायन तथा नृत्य इन दोनों अंगों का पूर्णतः अभ्यास किया था। साज, करताल, एकतारा इत्यादि वाद्यों का वर्णन मीराबाई के ही संगीत साधनों में प्राप्त होता है। मीराबाई का एक ही लक्ष्य था, अपने संपूर्ण जीवन को कृष्णमय बनाना, और उसको ही प्राप्त करना, वह अपने प्रियतम के लिए गाती थी और नृत्य भी करती थी।

मैं तो साँवरे के रंग राची।
साजि सिंगार बाँधि पगु घुघरू,
लोक–लाज तजि नाची।।

जिस समय समाज में स्त्रियों के लिए शिक्षा, संगीत आदि की स्थिति बहुत अधिक अच्छी नहीं थी उसे समय में मीराबाई ने कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना किया तथा समाज के ताने–बानों को सहते हुए अपनी भक्ति भावना के स्वरूप को संगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया था। मीराबाई एक कवियित्री के साथ– साथ, एक सफल गायिका तथा सफल संगीतज्ञा भी थी। मीराबाई द्वारा रचित भगवान श्री कृष्ण के

भक्ति पद अनेकों रागों तथा अनेकों तालों में बंधे हुए हम सभी के समक्ष प्रस्तुत हैं। भगवान श्री कृष्ण के ऐसे सुंदर–सुंदर तथा सुमधुर पदों की रचना तथा प्रभु भक्ति की पीर ने उन्हें सुप्रसिद्ध कवियत्रि और गायिका बना दिया था। मीरा के एक–एक पद में रस तथा भाव है और यह भाव संगीत के स्वरूप से सजा हुआ है क्योंकि यह कहा जा सकता है कि "स्वर ही रस की सृष्टि है", अन्यथा शब्द तो पंगु है। संगीत रहित शब्दों के द्वारा भाव तो प्रकट हो सकता है, लेकिन उन भावों को जीवन देने के लिए संगीत का आवश्यक होना अनिवार्य है। मीराबाई संगीत के इस 'सर्वव्यापी' रहस्यों को भली भांति जानती थी। मीरा की आत्मा तो पल–पल अपने आराध्य के दर्शन हेतु व्याकुल हो रही थी, अपने प्रभु के दर्शन हेतु वह हर स्थान पर अपने गिरधर को पाने के लिए हर संभव प्रयास करती रही लेकिन कहीं पर भी उन्हें प्रभु–मिलन की आस दिखाई नहीं दे रही थी, अंत में मीरा ने सभी मोह त्यागकर, अपने हाथ में 'इकतारा' लेकर संगीत के माध्यम से अपने स्वरों के द्वारा अपनी सांगितिक भक्ति भावनाओं को प्रकट किया।

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।।

संगीत के इसी काव्य के पदों ने, 'गेयत्व' द्वारा उनके पदों, भजनों एवं कीर्तनों को अमरत्व प्रदान किया है। इसी कारण उनका एक–एक पद आज ही नहीं बल्कि भविष्य में आने वाले सभी गायकों के लिए एक अमूल्य संग्रह तथा विरासत के रूप में होगा। इसलिए मीराबाई के युग को "भक्ति संगीत का स्वर्ण युग" अथवा "मीरा का सांगितिक युग" के नाम से भी पुकारा जा सकता है।

निष्कर्ष

यह तो निश्चित रूप से ही कहा जा सकता है कि मीराबाई संगीत कला की पूर्णतः ज्ञाता थी, मीरा ने गायन कला के साथ–साथ नृत्य कला को अपनाकर कृष्णकाव्य को भी सर्वाधिक भावपूर्ण बनाया था। यह तो सर्वमान्य है कि मीराबाई ने अपने गिरिधर गोपाल को नष्त्य के माध्यम से रिझाया था। इसकी पुष्टि मीरा द्वारा रचित निम्न पंक्ति द्वारा होती है जैसे–

पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे।
मैं तो अपने नारायण की आपहि हो गई दासी रे।।

मीरा द्वारा रचित संगीत व काव्यधारा से संपूर्ण ब्रह्मांड गुंजायमान है। जब भी किसी गायिका या गायक को भजन या गीत गाने के लिए कहा जाता है या कहा जाएगा तो उसकी स्वर–लहरियों में "मीरा की पदवालियों" का ही पद मुखरित हो उठेगा। इसका मुख्य कारण काव्य आत्मसफुरित है तथा स्वरों में प्रेम की अनुभूति व समर्पण की भावना विद्यमान है, यही भक्ति संगीत की रहसयात्मकता को दर्शाती है। मीराबाई के गीत, पद, भजनावली वर्तमान समय में सभी के लिए तथा विशेषकर महिलाओं के लिए प्रेरणा स्वरूप होंगे, जिस समय समाज में स्त्रियों की स्थिति बहुत अधिक अच्छी नहीं थी, उस समय में मीराबाई ने कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना किया तथा पुरुष प्रधान समाज में नारी विरोधी रीतियों को तोड़कर संगीत द्वारा एक नई राह बनाई जो उनके हृदय के अधिक करीब थी। समाज की अन्यायपूर्ण व्यवस्था भी मीराबाई के विश्वास और लगन को छू न सकी। मीराबाई की सांगितिक लहर को देखकर यह ज्ञात होता है कि मानवजाति के उत्थान हेतु वह पथ प्रदर्शक का काम करती है, उनकी प्रांसगिकता को देखकर यह ज्ञात होता है कि समय के साथ मानवीय दृाष्टिकोणों में परिवर्तन होता है व सैकड़ों वर्षों से भुला दिए जाने वाले व्यक्तित्व

भी पुनः ऐतिहासिक धरती पर अवतरित होते हैं। मीराबाई वर्तमान में भारत ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महान व्यक्तित्व के रूप में हम सभी के समक्ष उपस्थित रहेंगी। मीराबाई राजस्थान का ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारत देश का गौरव है। मीराबाई संपूर्ण जनमानस में आस्था व श्रद्धा की प्रतीक है। आज संपूर्ण विश्व उनके जीवन, व्यक्तित्व तथा भक्ति भावना के विषय में जानकारी एकत्र करना चाहता है। मीराबाई के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समाज, समाज में होने वाले योगदान, तथा नारी सशक्तिकरण पर चिंतन एवं मनन करना समाज एवं संस्कृति के लिए नितांत आवश्यक है। इसी के साथ अंत में सिर्फ यही कहा जा सकता है कि हम सभी मीराबाई के समय में वापस तो नही जा सकते, परन्तु उनके गीतों एवं पदावलियों को सुनने के बाद उनकी उपस्थिति को अवश्य ही महसूस एवं आत्मसात कर सकते हैं।

संदर्भ

1. गर्ग, डॉ॰ लक्ष्मीनारायण. (2012). निबन्ध संगीत. संस्करण (चतुर्थ). संगीत कार्यालयः हाथरस।
2. सक्सैना, डॉ॰ राकेशबाला. (2010). भक्ति संगीत. संगीत पत्रिका. संगीत कार्यालयः हाथरस. जुलाई।
3. गर्ग, डॉ॰ लक्ष्मीनारायण. (1978). मीरा संगीत अंक. संगीत कार्यालयः हाथरस. जनवरी–फरवरी।
4. कुमारी, पूनम. स्त्री चेतना और मीरा का काव्य।